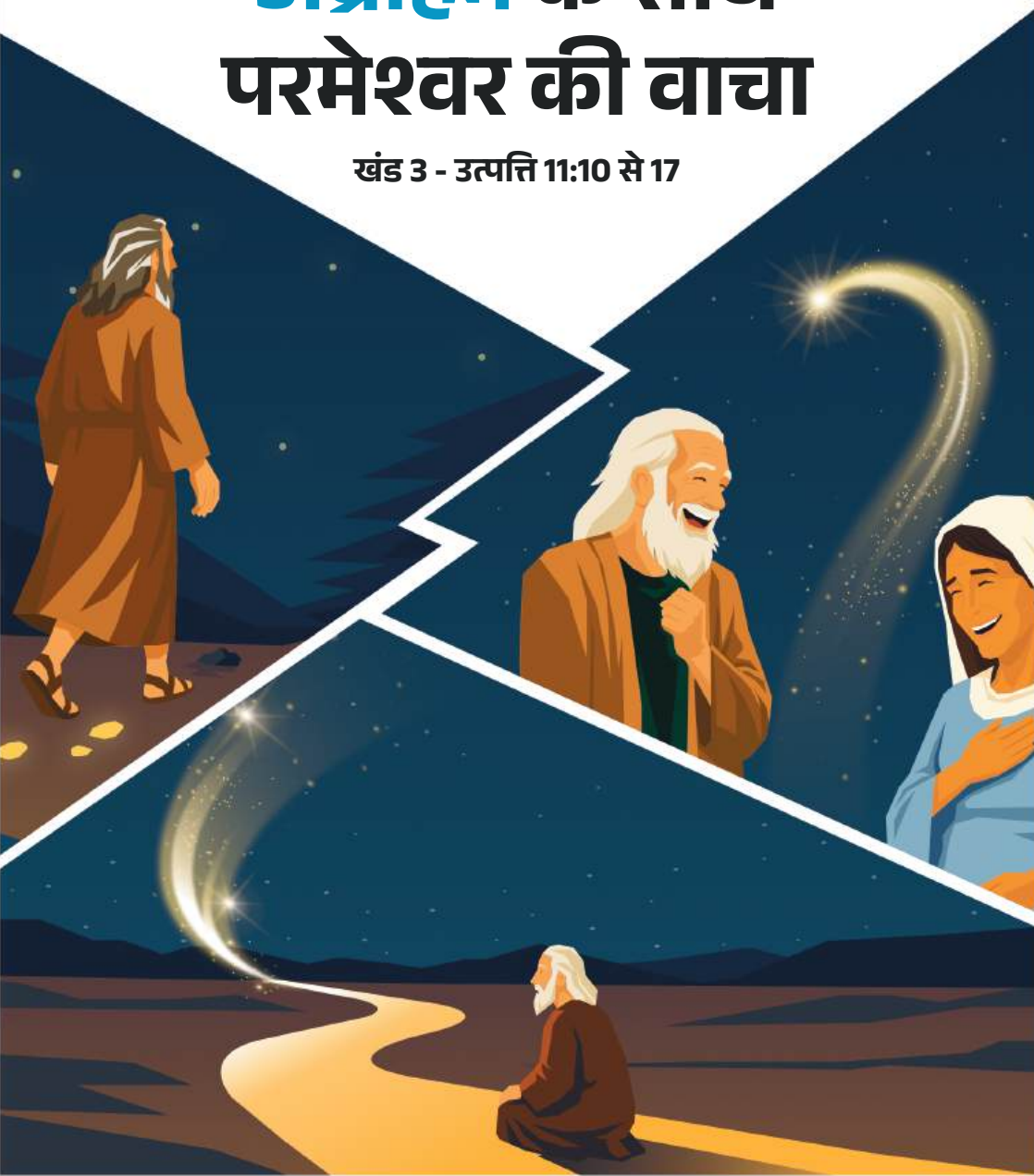
THRU the BIBLE

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा

खंड 3 - उत्पत्ति 11:10 से 17



मिलें बढ़ें बाँटें

मिलें, बाँटें और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें



मिलें
सप्ताह में एक बार



कैसे
धर्मग्रंथ संलग्नता
का उपयोग करे



शुरू करने से पहले प्रार्थना करें

प्रत्येक पाठ को शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको अनुग्रह में और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ाने के लिए करें।



बाइबल का अंश पढ़ें

जब आप अंश पढ़ें तो परमेश्वर को अपनी आँखें खोलने और उसके वचन की आपकी समझ को गहरा करने के लिए आमंत्रित करें।



पवित्रशास्त्र संलग्नता मार्गदर्शिका का अध्ययन करें

आपके द्वारा पढ़े गए अंश के अर्थ, संदर्भ और व्यक्तिगत अनुप्रयोग पर चिंतन करने के लिए प्रदान की गई पवित्रशास्त्र संलग्नता अध्ययन का अध्ययन करें।



पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर चिंतन करें

प्रत्येक शिक्षण के बाद, व्यक्तिगत चिंतन और अनुप्रयोग के लिए सूचीबद्ध पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर विचार करें और आपके छोटे समूह चर्चाओं के लिए.



डॉ. जे. वर्नोन मैकगी की शिक्षा को सुनें

यदि आप इस अंश पर संपूर्ण ऑडियो शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो ttb.bible पर जाएं या अपनी भाषा में THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करने के लिए अंतिम पृष्ठ पर दिए गए QR कोड को स्कैन करें।



हमारे सुझाए गए रोकने और शुरू करने के आइकन का इस्तेमाल करें। यह आपको सामग्री को सोच-समझकर और अपनी लय में आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

आपके लिए

पृष्ठ

इस धर्मशास्त्र संलग्नता का उपयोग कैसे करें 4

पृष्ठ

परमेश्वर की विश्वासयोग्य योजना
(उत्पत्ति 11:10 - 12:9) 7

पृष्ठ

परमेश्वर की कृपा पर विश्वास
(उत्पत्ति 12:10 - 13:13) 21

पृष्ठ

वादा, युद्ध और अखंडता
(उत्पत्ति 13:14 - 14:24) 35

पृष्ठ

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा
(उत्पत्ति 15) 51

पृष्ठ

अब्राम के विश्वास की परीक्षा
(उत्पत्ति 16) 65

पृष्ठ

वाचा की पुष्टि
(उत्पत्ति 17) 81


परमेश्वर की
विश्वासयोग्य योजना
उत्पत्ति 11:10 - 12:9

परमेश्वर की विश्वासयोग्य योजना

हे प्रिय स्वर्गीय पिता,

शेम से लेकर अब्राहम तक पीढ़ियों के माध्यम से आपकी वफादारी के प्रमाण के लिए और हमें यह याद दिलाने के लिए धन्यवाद कि आपके वादे कभी विफल नहीं होते। जब आगे का रास्ता अनिश्चित हो, तब भी हमें आप पर भरोसा करना सिखाएँ। हमारे हृदयों को आत्मनिर्भरता से बचाएँ और हमें उस विश्वास से भर दें कि हम आपके दिखाए मार्ग पर चलें, भले ही हमें पूरी तस्वीर न दिखाई दे। अब्राहम के जीवन की तरह, हमारा जीवन भी आराधना की वेदी बन जाए जो आपकी कृपा का साक्षी हो।

यीशु के नाम में, आमीन।

शेम से अब्राम तक के वंशज

उत्पत्ति 11:10-32



"आजकल बहुत से ऐसे पुरुष और महिलाएं हैं जो अपने भीतर ही परमेश्वर के विरुद्ध खड़े हैं। उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा बाबेल का टावर बना लिया है।"

-डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

परमेश्वर की विश्वासयोग्य योजना

जलप्रलय के बाद, पवित्रशास्त्र नूह के पुत्र **शेम की वंशावली** का वर्णन करता है, जिसके माध्यम से **परमेश्वर का वादा** जारी रहेगा। जो देखने में पीढ़ी दर पीढ़ी पिता और पुत्रों की मात्र सूची प्रतीत होती है, **वास्तव में वह परमेश्वर का विश्वासयोग्य उद्धार का मार्गदर्शन था।**

यह वंश हमें तेराह तक ले जाता है, जिनके तीन पुत्र थे: अब्राम (बाद में अब्राहम), नाहोर और हारान। अब्राम ने सारई (बाद में सारा) से विवाह किया, जो संतान उत्पन्न करने में असमर्थ थीं, जिसके परिणामस्वरूप चमत्कारिक रूप से इसहाक का जन्म हुआ।

परमेश्वर अक्सर अपने महानतम कार्यों की शुरुआत वहीं से करते हैं जहाँ मनुष्य की शक्ति समाप्त हो जाती है।

इतिहास के इस मोड़ तक, मानव जाति पहले ही तीन प्रकार के पाप दोहरा चुकी थी:



जीवन का अभिमान

कैन, जिसने इनकार कर दिया अपने पाप का पश्चाताप करने के लिए।



शरीर का पाप

जलप्रलय से पहले के दिनों में, जब हिंसा और भ्रष्टाचार ने पृथ्वी को व्याप्त कर लिया था।



इच्छा का विद्रोह

बाबेल के टावर पर, जहाँ मनुष्य ने परमेश्वर के आदेश का उल्लंघन किया और वे अपनी ही प्रसिद्धि चाहते थे।

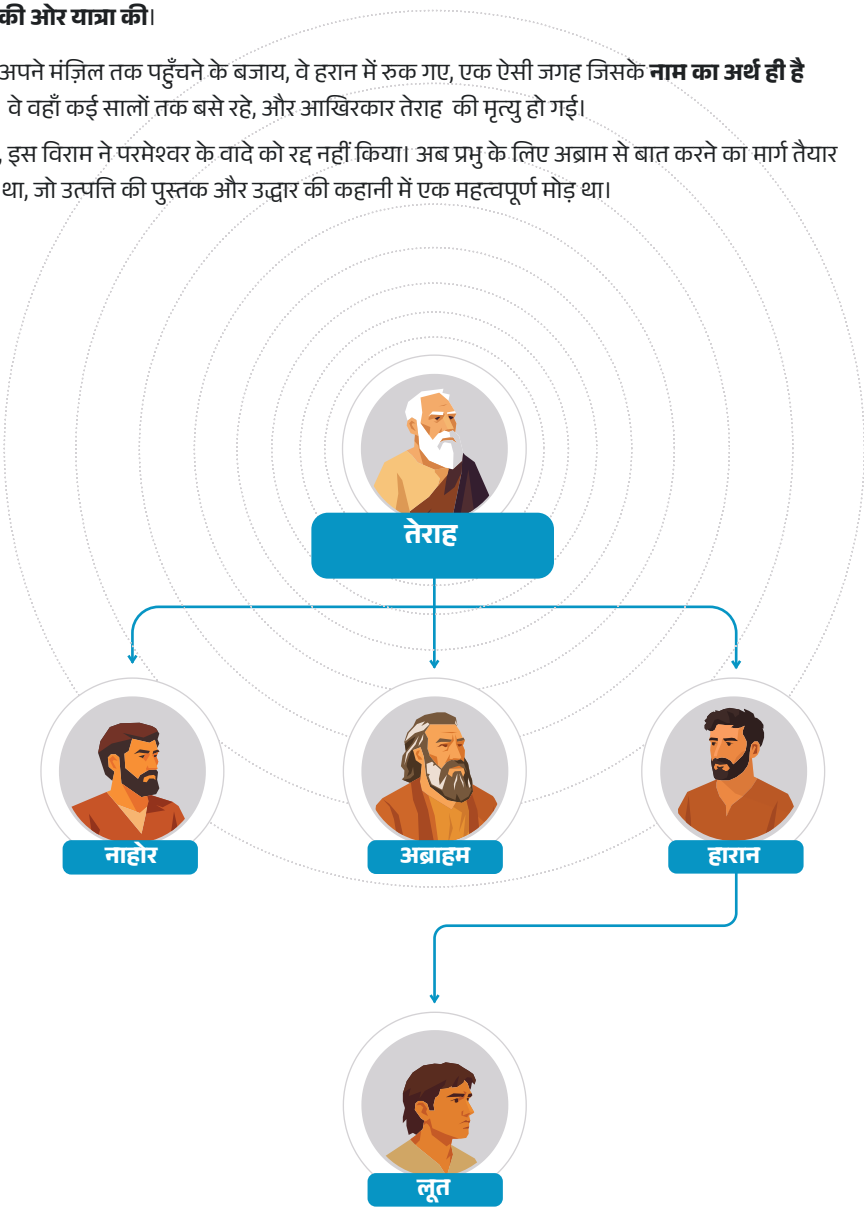
यद्यपि राष्ट्र बिखर गए और हृदय कठोर हो गए, परमेश्वर ने अपना ध्यान एक व्यक्ति और एक परिवार पर केंद्रित किया, जिसके माध्यम से वह सभी लोगों को आशीष देगा।

तेराह की यात्रा और देरी

तेराह ने कसदियों के ऊर के समृद्ध नगर को छोड़ा और अब्राम, साराई तथा अपने पोते लूत को साथ लेकर **कनान की ओर यात्रा की**।

लेकिन अपने मंज़िल तक पहुँचने के बजाय, वे हरान में रुक गए, एक ऐसी जगह जिसके **नाम का अर्थ ही है "देरी "**। वे वहाँ कई सालों तक बसे रहे, और आखिरकार तेराह की मृत्यु हो गई।

फिर भी, इस विराम ने परमेश्वर के वादे को रद्द नहीं किया। अब प्रभु के लिए अब्राम से बात करने का मार्ग तैयार हो गया था, जो उत्पत्ति की पुस्तक और उद्धार की कहानी में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।



उत्पत्ति की कहानी में एक महत्वपूर्ण मोड़

यह परमेश्वर की उस **योजना को प्रकट करता है**, जिसके द्वारा वह अब्राहम के वंश के माध्यम से जो अंततः मसीहा तक पहुँचता है हर राष्ट्र के लिए आशा और **आशीष लाना चाहता है।**



उत्पत्ति 1-11

एक सार्वभौमिक इतिहास, जिसमें शामिल हैं: सृष्टि, पतन, जलप्रलय, और बाबेल का टॉवर।



उत्पत्ति 12-50

करीब 350 वर्ष

एक वाचा की कहानी जो अब्राहम के विश्वास के **परिवार पर केंद्रित है।**

परमेश्वर की उद्धार योजना अब्राहम और उसके वंशजों से किए गए उनके वादों के माध्यम से प्रकट होती है।

इसके बारे में सोचें

सवाल 1

आपको अपने जीवन में अहंकार, शारीरिक वासनाओं के खिंचाव, या हठी इच्छाशक्ति के कौन-कौन से लक्षण दिखाई देते हैं?

लागू करें

सवाल 2

तेराह हारान में रुक गया, जिससे कनान की यात्रा में देरी हुई।

क्या आपकी आध्यात्मिक यात्रा में कोई "विलंब" आया है, जहाँ आपने परमेश्वर के आह्वान के बुलावे का पूरी तरह पालन करने के बजाय किसी कमतर चीज़ से ही समझौता कर लिया हो?

अपने "हारान" को पीछे छोड़कर परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने के लिए आप कौन सा व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं, उसे लिखिए।

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

अब्राम के साथ परमेश्वर के वादे

उत्पत्ति 12:1-9

> पहले तीन पद बताते हैं कि परमेश्वर ने अब्राम (अब्राहम) को तीन प्रकार की प्रतिज्ञाएँ दीं। वास्तव में यही बाइबिल का मुख्य केंद्र है, और बाकी पवित्रशास्त्र इन प्रतिज्ञाओं के धीरे-धीरे पूरे होने को दिखाता है।

"अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया।"
(रोमियों 4:3)

परमेश्वर ने पूरी मानवजाति से सीधे व्यवहार करने के बजाय, **अब्राम** को, जिसे बाद में अब्राहम के नाम से जाना गया, एक **महान राष्ट्र का पिता** बनने के लिए बुलाया, और उसे अपने उद्देश्यों के लिए अलग किया गया था।

अब्राम को अपने देश, **रिश्तेदारों और अपने पिता के घर को छोड़कर** एक ऐसे देश की यात्रा करने का आदेश दिया गया था जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

फिर भी इस बुलावे के साथ ही **परमेश्वर की त्रिविध प्रतिज्ञा भी आई,** जो उस वाचा का सार था जिसने आगे आने वाले समस्त पवित्रशास्त्र को आकार दिया:

परमेश्वर का त्रिविध वादा



एक भूमि: परमेश्वर अब्राम को एक भूमि दिखाएगा और उसे उसके वंशजों को देगा।



एक राष्ट्र: परमेश्वर अब्राम के वंशजों को एक महान राष्ट्र बनाएगा और उसका नाम महान करेगा।



एक आशीष : अब्राम के द्वारा, "पृथ्वी के सभी परिवार आशीष पाएंगे।" यह आशीष अंततः यीशु मसीह में पूरा हुआ, जो अब्राहम के वंश से आए मुक्तिदाता थे।

अब्राम की महानता उनके रुतबे या धन-दौलत में नहीं, बल्कि उनके विश्वास में थी। उन्हें परमेश्वर पर इतना भरोसा था कि वे उनकी आज्ञा का पालन करते थे, भले ही उन्हें यह पता न हो कि वे कहाँ जा रहे हैं। ऊर की सुख-सुविधाओं और आलीशान जीवन को छोड़कर, वे कनान की कठिन भूमि में प्रवेश कर गए, यह मानते हुए कि परमेश्वर के वचन का पालन करना किसी भी सांसारिक सुरक्षा से श्रेष्ठ है।

उस भूमि पर पहुँचने पर, अब्राम के पहले कार्यों ने उसके हृदय को प्रकट किया।
उसने तम्बू लगाया, जो एक यात्री के समान परमेश्वर पर निर्भर जीवन का संकेत था, और जहाँ-जहाँ वह ठहरा, वहाँ-वहाँ उसने यहोवा के लिए वेदियाँ बनाईं, जिससे उसके पीछे आराधना की एक शांत गवाही रह गई।

उनकी आज्ञाकारिता ने उन्हें परमेश्वर के साथ और अधिक गहरे संबंध स्थापित करने में मदद की, क्योंकि प्रभु ने उन्हें फिर से दर्शन दिए और अपने वादों की पुष्टि की।

अब्राम की यात्रा दर्शाती है कि परमेश्वर के वादे हमें विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए आमंत्रित करते हैं।
उसके वचन का पालन करो, और उन यात्रियों की तरह जीवन व्यतीत करो जिनकी आशा उसी में टिकी हुई है।



चिंतन करें और लागू करें

सवाल 1

अब्राम ने परमेश्वर की पुकार का पालन करने के लिए अपने देश की सुरक्षा छोड़ दी।

आपके जीवन में ऐसी कौन-सी ऐसी सुविधाएँ या सुरक्षा हैं जिन्हें परमेश्वर आपसे छोड़ने के लिए कह रहा है ताकि आप उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकें?

सवाल 2

अब्राम जहाँ भी गया, उसने वेदियाँ बनाईं और इस प्रकार अपने पीछे आराधना की एक शांत गवाही छोड़ गया।

आपके लिए अपने दैनिक जीवन में एक "आत्मिक वेदी" बनाना कैसा दिखता है जो दूसरों को परमेश्वर की उपस्थिति की ओर संकेत करता हो, या आपको परमेश्वर के साथ अपने घनिष्ठ मेल-मिलाप के समय की याद दिलाता हो?

सवाल 3

एक ऐसा कदम लिखिए जो आप परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा दिखाने के लिए उठाएँगे, भले ही आगे का मार्ग अनिश्चित क्यों न लगे।

दृश्य सारांश





1. **तेराह** ने अब्राम, साराई और लूत को कसदियों के **ऊर** से **कनान** की ओर ले गया।
2. **तेराह** वह कनान में रुके, जहाँ 205 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।
3. **अब्राम** ने **शेकेम** में एक वेदी बनाई
4. **अब्राम** ने **बेतेल** में एक वेदी बनाई

इससे आपको क्या सीख मिली ?

अपने जीवन में 'परमेश्वर की बुद्धि' को एकीकृत करना।

मैक्गी का सुविचार



“ मेरे दोस्त, तुम्हारा अनुभव कैसा है? अनुभव होने के लिए तुम्हें अपने घर के सामने पर्चे छोड़ने की ज़रूरत नहीं है और न ही अपनी कार पर "यीशु बचाता है" का स्टिकर लगाने की (और फिर कुछ लोगों की तरह अनुचित तरह हाईवे पर गाड़ी चलाने की)। यह तो बिल्कुल भी अनुभव नहीं है। ”


परमेश्वर की
कृपा पर विश्वास
उत्पत्ति 12:10 - 13:13

परमेश्वर की कृपा पर विश्वास

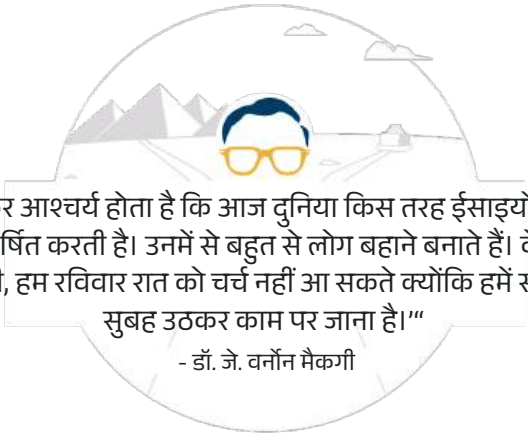
स्वर्गीय पिता,

हमें सिखाओ कि जब अकाल हमारी परीक्षा ले, जब भय हमें लुभाए और जब हमारे सामने विकल्प हों, तब हम आप पर भरोसा करना सीखें।
हमें अपनी ही समझ पर निर्भर रहने से बचाएं।
हे प्रभु, दृष्टि से नहीं, विश्वास से चलने में हमारी सहायता कीजिए, ताकि हमारा जीवन आपके वादों का साक्षी हो। जब हम भटक जाएं, तो हमें आराधना के वेदी पर वापस ले आइए।

यीशु के नाम में, आमीन।

अब्राम के विश्वास का पतन

उत्पत्ति 12:10-20



"यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज दुनिया किस तरह ईसाइयों को अपनी ओर आकर्षित करती है। उनमें से बहुत से लोग बहाने बनाते हैं। वे कहते हैं, 'भाई मैकगी, हम रविवार रात को चर्च नहीं आ सकते क्योंकि हमें सोमवार को सुबह उठकर काम पर जाना है।'"

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

अकाल और दुनिया का समाधान

उस देश में अकाल पड़ा; इसलिये अब्राम मिस्र देश को चला गया कि वहाँ परदेशी होकर रहे–क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था। (उत्पत्ति 12:10)

अब्राम उसी भूमि में था जिसका परमेश्वर ने वादा किया था, तभी अकाल पड़ गया। दिन-प्रतिदिन चरागाह सूखते जा रहे थे और भेड़ें कमजोर होती जा रही थीं। यात्रियों ने चेतावनी दी कि अकाल फैल रहा है और मिस्र के अनाज और हरी-भरी घाटियों के बारे में बातें करने लगे। अब्राम ने सोचा, "शायद मिस्र से अनाज मिल जाए।"

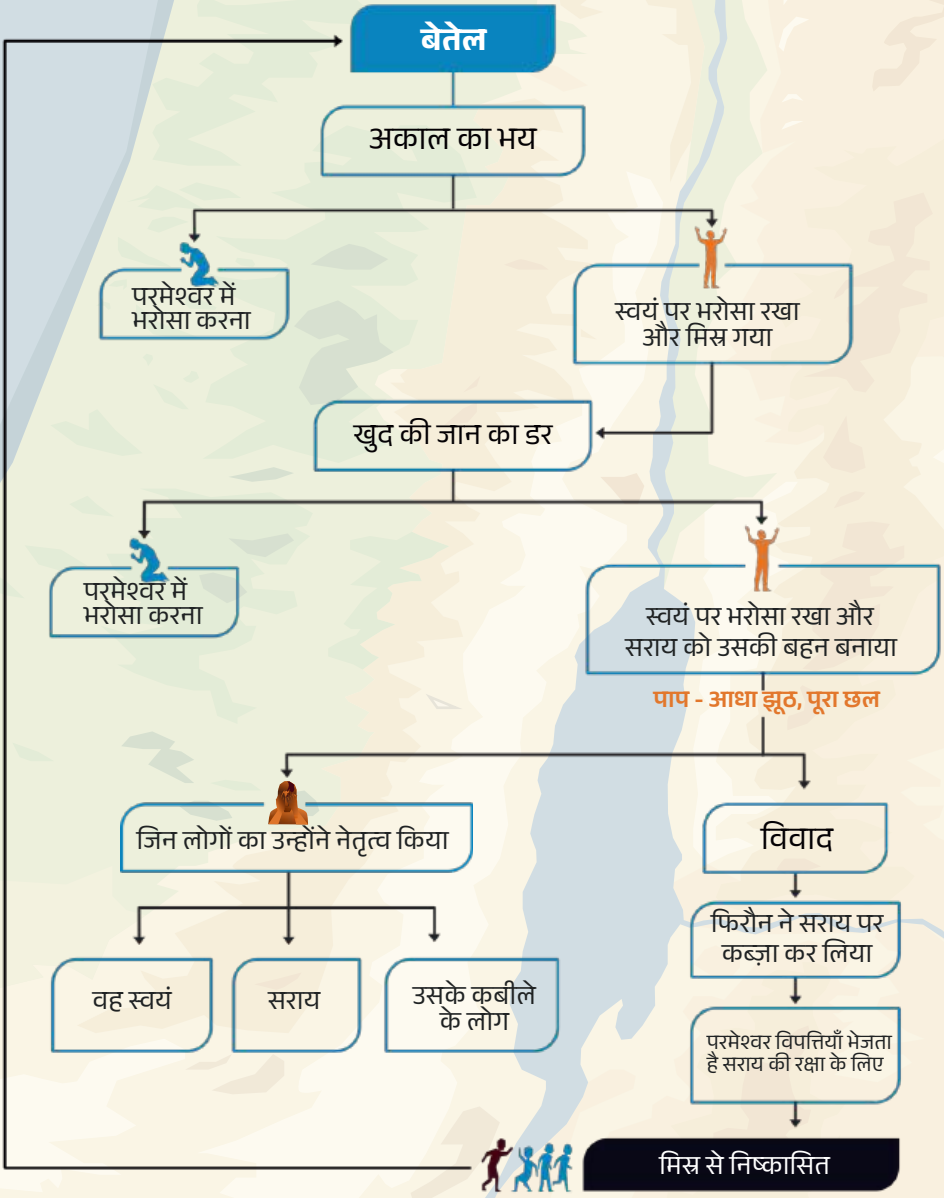
मिस्र एक तार्किक और समझदारी भरा विकल्प प्रतीत हो रहा था। दूसरे लोग भी वहीं जा रहे थे। यात्रियों की बयान ने इसकी प्रचुरता की पुष्टि की। अब्राम अपने निर्णय को अच्छी तरह समझा सकते थे, "यहाँ कोई चारागाह नहीं है, और मिस्र में इसकी भरमार है।" फिर भी एक सवाल अब भी बना हुआ है:

क्या परमेश्वर ने अब्राहम को मिस्र जाने के लिए कहा था? आप क्या चुनेंगे?

वादे का देश ही परीक्षाओं की भूमि भी थी।



"और जब वह मिस्र में प्रवेश करने के निकट था, तब उसने अपनी पत्नी साराई से कहा, 'मैं सचमुच जानता हूँ...'" अब्राम ने अपना निर्णय ले लिया था और जैसे-जैसे वह मिस्र के निकट पहुँचता गया, उसका भय बढ़ता गया। उसे फिर से निर्णय लेना था।



और वह दक्षिण से बेतेल तक अपनी यात्रा पर निकल पड़ा, उस स्थान तक
“फिर वह दक्षिण देश से चलकर, बेतेल के पास उसी स्थान को पहुँचा, जहाँ पहले उसने अपना तम्बू खड़ा किया था, जो बेतेल और आई के बीच में है। यह स्थान उस वेदी का है, जिसे उसने पहले बनाया था, और वहाँ अब्राम ने फिर यहोवा से प्रार्थना की।” (उत्पत्ति 13:3-4)

अब्राम बेतेल लौट आया, उस वेदी के पास जिसे उसने पहले बनाया था। मिस्र ने धन तो दिया, पर संगति नहीं। वेदी पर अब्राम ने एक बार फिर प्रभु के नाम का आह्वान किया।



> परमेश्वर के पास वापस आने की इच्छा रखने वाले किसी भी पुरुष या महिला, यानी अब्राम, जो कि एक भटका हुआ पुत्र था, के लिए वेदी पर वापस लौटने का हमेशा एक रास्ता होता है।



इसके बारे में सोचें

सवाल 1

जब आप तंगी, अनिश्चितता, या जल्दी कदम उठाने के दबाव वाले दौर का सामना करते हैं, तो आमतौर पर आपके फैसलों को कौन-सी चीज़ राह दिखाती है? क्या आप परमेश्वर के वादों पर अपने विश्वास से प्रेरित होते हैं, या उन व्यावहारिक उपायों से जो ज़्यादा सुरक्षित लगते हैं? ऐसा क्यों?

सवाल 2

एक ऐसी स्थिति की पहचान करें जिसमें आप डर के मारे प्रतिक्रिया करते हैं। कोई भी कदम उठाने से पहले रुकें, उसके बारे में प्रार्थना करें और सोच-समझकर ऐसा कदम चुनें जो परमेश्वर के मार्गदर्शन पर विश्वास दर्शाता हो। डर से भरी अधूरी सच्चाइयों को साहसपूर्ण विश्वास से बदलें।

आवेदन

सवाल 3

उस समय के बारे में सोचें, जब परमेश्वर ने आपको अपनी वेदी पर एक दूसरा मौका दिया था। इसे लिखें या इसका चित्र बनाएँ।

अब्राम और लूत

उत्पत्ति 13:1-13

धन और संघर्ष

अब्राम भेड़-बकरी, गाय-बैल, और सोने-चाँदी का बड़ा धनी था।

लूत के पास भी, जो अब्राम के साथ चलता था, भेड़-बकरी, गाय-बैल, और तम्बू थे। इसलिए उस देश में उन दोनों के लिए पर्याप्त स्थान न था कि वे इकट्ठे रहें क्योंकि उनके पास बहुत सम्पत्ति थी इसलिए वे इकट्ठे न रह सके। सो अब्राम, और लूत की भेड़-बकरी, और गाय-बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ। उस समय कनानी, और परिज्जी लोग, उस देश में रहते थे।" (उत्पत्ति 13:2, 5-7)





कनानी और पेरिज़्ज़ी लोगों ने अब्राम और लूत के बीच क्या देखा होगा? एकता और मेल-जोल, या फूट और झगड़ा?

धन-दौलत अक्सर परिवारों में कलह और झगड़े पैदा करती है।

जब परमेश्वर हमें धन-दौलत से नवाज़ता है, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए ईसाई होने के नाते ?

हमें यहां एक उदाहरण देखने को मिलता है कि हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए:

तब अब्राम लूत से कहने लगा, "मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई-बन्धु हैं। क्या सारा देश तेरे सामने नहीं? सो मुझसे अलग हो, यदि तू बाईं ओर जाए तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा; और यदि तू दाहिनी ओर जाए तो मैं बाईं ओर जाऊँगा।" (उत्पत्ति 13:8-9)

बड़े होने के नाते, अब्राम सबसे अच्छी भूमि पर अपना दावा कर सकता था, लेकिन इसके बजाय उसने स्वयं को विनम्र किया और लूत को चुनने का अवसर दिया।

क्या हम परमेश्वर के राज्य के लिए अपने हक का बलिदान करने को तैयार हैं?

लूत ने अपनी निगाहें ऊपर उठाईं और उपजाऊ घाटी को देखा। यह उसे मिस्र की याद दिलाती थी। घास हरी थी, नदियाँ धरती को सींच रही थीं, लेकिन इस सुंदरता के परे पाप में डूबा हुआ सदोम था। धीरे-धीरे, लूत ने अपना तम्बू उसके करीब लगाया, यहाँ तक कि वह उसकी छाया में रहने लगा।

क्या हमारे चुनाव हरी घास और उपजाऊ भूमि पर आधारित हैं या फिर परमेश्वर हमसे क्या चाहता है?



> लूत ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, उसे मैदान दिखाई दिया और वह उसी दिशा में चल पड़ा। यही उसके जीवन की सबसे बड़ी गलती थी।





इसके बारे में सोचें

सवाल 1

आपकी ज़िंदगी में ऐसे कौन से अवसर या "बेहतर विकल्प" हैं जो ऊपरी तौर पर तो आकर्षक लगते हैं, लेकिन शायद आपको परमेश्वर की सबसे बेहतरीन योजना से दूर ले जा सकते हैं? आप इन दोनों के बीच का फ़र्क कैसे पहचान सकते हैं?

सवाल 2

आपके लिए व्यक्तिगत रूप से दृष्टि से नहीं, बल्कि विश्वास से चलने का क्या अर्थ है?

सवाल 3

किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें जिससे आपका मतभेद है, चाहे वह परिवार का सदस्य हो, मित्र हो या चर्च का कोई व्यक्ति हो। उस व्यक्ति से सुलह करने के लिए आप क्या त्याग कर सकते हैं?

दृश्य सारांश

अब्राम और लूत की यात्रा

धन



लड़ाई

अलग होना



लूत

ने देखकर चुनाव किया

अब्राहम

विश्वास से चुनता है



इससे आपको क्या सीख मिली ?

अपने जीवन में 'परमेश्वर की बुद्धि' को एकीकृत करना।

मैक्गी का सुविचार



“कोई भी इंसान अचानक नहीं गिरता। यह हमेशा समय के साथ धीरे-धीरे होता है। आप अपने तम्बू का पर्दा उठाते हैं, और सदोम की ओर अपना तम्बू गाड़ते हैं, और यहीं से शुरुआत होती है।”


वादा, युद्ध
और ईमानदारी
उत्पत्ति 13:14 - 14:24

वादा, युद्ध और ईमानदारी

स्वर्गीय पिता,

अब्राम के जीवन के माध्यम से हमें यह सिखाने के लिए धन्यवाद कि सच्चा आशीष विश्वास से मिलता है, न कि हमारे अपने प्रयासों से।
हे प्रभु, हमें अपने वादों पर चलने में हमारी सहायता कीजिए, आप पर भरोसा रखते हुए, अपने पालनहार के रूप में और जीवन के हर पड़ाव में आपका सम्मान करने में हमारी मदद कीजिए। हमारी विजय आपके नाम कि महिमा करे और आपकी कृपा की समृद्धि को प्रकट करे।

यीशु के नाम में, आमीन।

प्रभु अपने वादे की पुनः पुष्टि करता है

उत्पत्ति 13:14-18

जब लूत अब्राम से अलग हो गया तब उसके पश्चात यहोवा ने अब्राम से कहा, आंख उठा कर जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर-दक्खिन, पूर्व-पश्चिम, चारों ओर दृष्टि कर। क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिये दूंगा।

उत्पत्ति 13:14-15

जब लूत अंततः चला गया, तो **परमेश्वर ने फिर से बात की।** मिस्र में अब्राम के समझौते के बाद जो सन्नाटा छाया हुआ था, वह परमेश्वरीय आश्वासन से टूट गया। कभी-कभी जब **हम उन रिश्तों, आदतों या बंधनों को छोड़ देते हैं जो हमें पूर्ण आज्ञाकारिता से रोकते हैं**, तो **परमेश्वर की वाणी अधिक स्पष्ट हो जाती है** (2 कुरिन्थियों 6:17-18)। अब्राम एक बार फिर परमेश्वर की वाणी स्पष्ट रूप से सुन सका।

आप किन रिश्तों, आदतों या संबंधों को थामे हुए हैं?

परमेश्वर ने उससे कहा, "**अब अपनी आँखें ऊपर उठाओ**..." इससे पहले लूत ने अपनी आँखें सदोम की ओर उठाई थीं और उसे **सांसारिक अवसर दिखाई दिए थे।** अब अब्राम ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और उसे **परमेश्वरीय वादा दिखाई दिया।** कितना बड़ा अंतर! **एक ने दृष्टि से देखा, दूसरे ने विश्वास से।**

परमेश्वर की वाचा **स्पष्ट और सटीक** थी। उस भूमि की सीमाएँ, दिशा और निश्चित थे। मैक्गी हमें याद दिलाते हैं कि परमेश्वर वास्तविक चीज़ों से व्यवहार करते हैं, अस्पष्ट सपनों या प्रतीकात्मक आशाओं से नहीं। स्वर्ग उतना ही वास्तविक है जितना कि वह भूमि जिस पर अब्राम खड़ा था।
परमेश्वर के वादे **ठोस, भरोसेमंद और शाश्वत हैं।**

क्या स्वर्ग सचमुच एक असली जगह है?



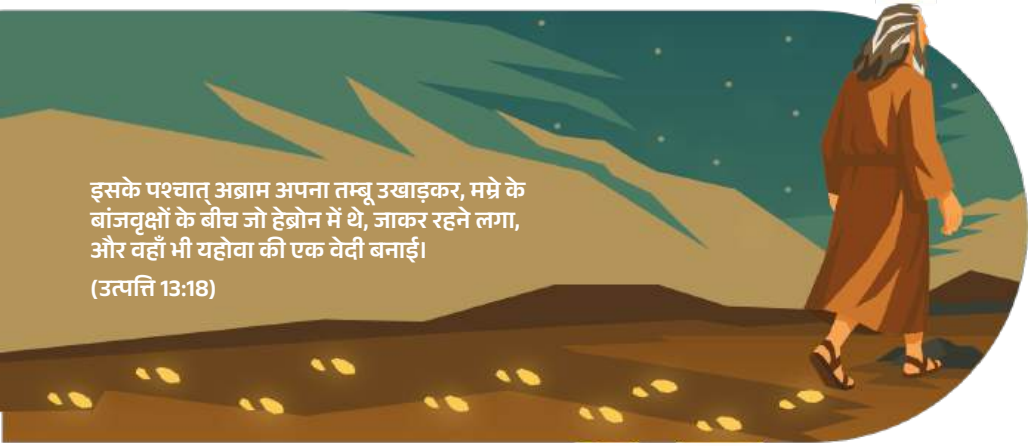
'उठ, इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर; क्योंकि मैं उसे तुझी को दूँगा।
(उत्पत्ति 13:17)

विश्वास केवल देखता नहीं, चलता भी है। परमेश्वर ने अब्राम को उस भूमि का अन्वेषण करने, अपने वादे पर कदम रखने के लिए आमंत्रित किया। **हर कदम विश्वास का प्रतीक था।**

सच्चा विश्वास कर्मों की ओर ले जाती है, ऐसे कर्म जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए किए जाते हैं।



> परमेश्वर सैद्धांतिक बातों से नहीं, बल्कि वास्तविक और यथार्थ बातों से व्यवहार करता है।



अब्राम हेब्रोन के मम्रे में बस गए, ये नाम समृद्धि और सहभागिता का प्रतीक हैं। वहाँ उन्होंने एक और वेदी बनाई। अब्राम जहाँ भी गए, वहाँ से उनकी पहचान आसानी से हो जाती थी, क्योंकि वे अपने पीछे आस्था की गवाही छोड़ गए थे।

मैकगी का कहना है कि जहाँ मनुष्य ने चंद्रमा पर पदचिह्न और झंडे छोड़े हैं,
वहीं अब्राम ने पृथ्वी पर वेदी स्थापित की। अंतर गहरा है। अब्राम की संपत्ति आध्यात्मिक थी, परमेश्वर के साथ सहभागिता की संपत्ति।



हारान

महा सागर

शेकेम

बेतेल और आई

कनान

मृत सागर

मिस्र

इसके बारे में सोचें

सवाल 1

क्या दुनिया में कोई ऐसी चीज है जो आपको प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संवाद करने से रोक रही है?

सवाल 2

क्या आपका विश्वास निष्क्रिय है, या आपका विश्वास कर्मों में परिणत हो रहा है? (याकूब 2:20-26)

लागू करें

सवाल 3

आप अपने पीछे किस प्रकार की गवाही छोड़ रहे हैं, महत्वाकांक्षा के पदचिह्न या उपासना की वेदी?

कुछ समय निकालकर अपनी समस्याओं के बजाय परमेश्वर के वादों पर ध्यान दें। विश्वास के साथ आज्ञापालन में चलें और परमेश्वर ने आपको जो करने को कहा है, उस एक बात पर अमल करें।

आज ही एक आध्यात्मिक वेदी बनाएं। एक डायरी बनाएं जिसमें उन समयों और स्थानों को अंकित करें जो आपके जीवन में परमेश्वर की वफादारी की गवाही देते हैं।

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

सदोम और गमोरा

उत्पत्ति 14:1-24



उत्पत्ति 14 में धर्मग्रंथ में **दर्ज पहले युद्ध** का परिचय मिलता है। **हालाँकि यह अब्राम की कहानी में एक रुकावट जैसा लगता है,** लेकिन यह **सांसारिक संघर्ष** को **आध्यात्मिक आह्वान** से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण अध्याय बन जाता है।



आलोचकों ने एक समय इस विवरण पर संदेह व्यक्त किया था, लेकिन पुरातत्व ने इन राजाओं के अस्तित्व की पुष्टि कर दी है। अम्रापेल की पहचान हम्मुराबी के रूप में हुई है, जो एक बार फिर साबित करता है कि परमेश्वर का वचन समय और संदेह के विरुद्ध सत्य है।



इन लड़ाइयों के बीच, लूत को बंदी बना लिया गया। जिस व्यक्ति ने कभी समृद्धि के कारण सदोम को चुना था, अब उसके पतन के साथ ही उसे बंदी बना लिया गया। जिस नगर ने सुख-सुविधाओं का वादा किया था, वही बंदी बना ले गया।

क्या आप दुनिया के बहुत करीब रह रहे हैं?

सावधान रहें, कहीं आप इसके विनाश की चपेट में न आ जाएं।

> एक अर्थ में, यह एक अत्यंत उल्लेखनीय अध्याय है... उत्पत्ति की पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक।

यह सुनकर कि उसका भतीजा बन्दी बना लिया गया है, अब्राम ने अपने तीन सौ अठारह प्रशिक्षित, युद्ध कौशल में निपुण दासों को लेकर जो उसके कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, अस्त्र-शस्त्र धारण करके दान तक उनका पीछा किया। (उत्पत्ति 14:14)

जब अब्राम ने लूत के पकड़े जाने की खबर सुनी, तो उनके विश्वास ने उन्हें कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने प्रशिक्षित सेवकों को इकट्ठा किया और आक्रमणकारी राजाओं का पीछा करते हुए उत्तर की ओर दमिश्क तक गए। संख्या में भारी अंतर होने के बावजूद, अब्राम को विश्वास था कि युद्ध प्रभु का है।
रणनीति और साहस से उसने शत्रु पर विजय प्राप्त की और लूत, बंदियों और उनकी समस्त संपत्ति को छुड़ा लिया।

आपको क्या लगता है कि अब्राम लूत को बचाने के लिए क्यों निकला?



तब शालेम का राजा मलिकिसिदक का राजा मलिकिसिदक: शालेम का राजा जिसका नाम धार्मिकता का राजा था, वह रोटी और दाखमधु लाया। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ था, जो इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर ने अपनी दया का हाथ आगे बढ़ाया हुआ है, और मनुष्य विश्वास के हाथ से उस तक पहुँचता है। , जो परमप्रधान परमेश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, "परमप्रधान परमेश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो। ' (उत्पत्ति 14:18-19)

मलिकिसिदक का उल्लेख शास्त्र में अचानक होता है, बिना किसी वंशावली या पृष्ठभूमि के, जो परमप्रधान परमेश्वर ("एल एल्योन") की उपासना करने वाले याजक-राजा को दर्शाता है।

उनकी भूमिका यीशु की झलक दिखाती है: एक शाश्वत याजक और राजा जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत (भजन संहिता 110:4; इब्रानियों)। उनके द्वारा दी गई रोटी और दाखमधु मसीह के बलिदान और प्रभु भोज की संगति की ओर इशारा करती है।

अब्राम ने अपनी सारी संपत्ति का दसवां हिस्सा मलिकिसिदक को दिया। उनके इस कार्य ने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की कि उनकी विजय परमेश्वर की ओर से हुई है, न कि उनकी अपनी शक्ति से।



आपको क्या लगता है कि मलिकिसिदक का परिचय यहाँ क्यों दिया गया ?

पिछले अध्याय में हमने देखा कि अब्राम ने गलत चुनाव किए। यहाँ भी, अब्राम एक ऐसे मोड़ पर है जहाँ उसके सामने एक चुनाव का विकल्प रखा गया है। क्या परमेश्वर के साथ पुनः संवाद स्थापित करने से उसमें कोई परिवर्तन आया है?

सदोम का राजा अब्राम के पास धन-दौलत और इनाम की पेशकश लेकर आया। उस समय के नियमों के अनुसार, अब्राम को लूट का पूरा अधिकार था, फिर भी उसने इनकार कर दिया। **परमेश्वर ने मलिकिसिदक के आशीष के द्वारा अब्राम को इस परीक्षा के लिए पहले ही तैयार किया जा चुका था।** आराधना से बल पाकर, अब्राम सांसारिक लाभ को परमेश्वर की महिमा छीनने नहीं देगा।

उसने परमपिता परमेश्वर, एल एल्योन स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी के प्रति अपनी निष्ठा घोषित की। **अब्राम नहीं चाहता था कि कोई भी व्यक्ति यह दावा करे, "मैंने उसे धनवान बनाया।" वह चाहता था कि हर सफलता केवल परमेश्वर के हाथ की ओर इशारा करे।**



इसके बारे में सोचें

सवाल 1

अब्राम द्वारा सदोम से धन लेने से इनकार करना किस प्रकार प्रकट करता है कि वह परमेश्वर को ही आशीष का सच्चा सोत मानता था?

सवाल 2

आप उन सूक्ष्म प्रलोभनों को कैसे पहचानते हैं और उनका विरोध कैसे करते हैं जो परमेश्वर के प्रति आपकी गवाही को खतरे में डाल सकते हैं?

लागू करें

सवाल 3

जीवन का कोई भी निर्णय लेने से पहले, अपने हृदय की जांच करें और अपने इरादों को परमेश्वर के प्रति समर्पित करें। यदि आपका इरादा स्वार्थपूर्ण लाभ के लिए है, न कि परमेश्वर का सम्मान करने के लिए, तो उस निर्णय पर पुनर्विचार करें और पहले से ही परमेश्वर का सम्मान करने का संकल्प लें।

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

इससे आपको क्या सीख मिली ?

अपने जीवन में 'परमेश्वर की बुद्धि' को एकीकृत करना।

मैक्गी का सुविचार



"अब्राहम ने बस परमेश्वर पर विश्वास किया। उसने परमेश्वर की बात को स्वीकार किया और उस पर भरोसा किया। उद्धार पाने का यही तरीका है: यह विश्वास करना कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए कुछ किया है, कि मसीह तुम्हारे लिए मरा और फिर जी उठा। केवल मसीह को स्वीकार करने मात्र से ही परमेश्वर तुम्हें धर्मी घोषित कर देगा।"



अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

उत्पत्ति 15

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

हे परम पिता,

जब मेरे हृदय में भय या संदेह भर जाए, तो मुझे अपने इस वचन की याद दिलाइए, "डरो मत। मैं तुम्हारी ढाल हूँ, तुम्हारा सबसे बड़ा प्रतिफल।" मेरी सहायता कीजिए कि मैं आप पर पुरा विश्वास कर सकूँ और आपके प्रेम में विश्राम पा सकूँ, यह जानते हुए कि आप मुझे कभी निराश नहीं करते।

यीशु के नाम में, आमीन।

अब्राम का विश्वास

Genesis 15:1-6

मैं तेरी ढाल हूँ।

"हे अब्राम, मत डर; मैं तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल हूँ।"

उत्पत्ति 15:1

लूत को अब्राम द्वारा बहादुरी से बचाने और **सदोम के राजा से धन-दौलत ठुकराने के बाद, परमेश्वर एक रात्रि दर्शन में फिर से अब्राम के सामने प्रकट हुए।** यह **चौथी बार था जब परमेश्वर ने स्वयं को अब्राम के सामने प्रकट किया,** अब उस रूप में जिसने उन्हें ऊर से मुक्ति दिलाई और **जो अपनी वाचा की प्रतिज्ञा को बार-बार दोहराता है।**

प्रभु की वाणी सन्नाटे को चीरते हुए सुनाई दी, "अब्राम, डरो मत।" **परमेश्वर ने अपने सेवक को सांत्वना और आश्वासन दिया।** शायद अब्राम को प्रतिशोध का भय या भविष्य की अनिश्चितता सता रही थी। परमेश्वर ने अनकहे प्रश्न का उत्तर दिया, "मैं तुम्हारी ढाल हूँ।" **उनकी सुरक्षा व्यक्तिगत थी।**

क्या आपने कभी आज्ञापालन की कीमत से डर महसूस किया है?

अब्राम को यह समझ आता है कि विश्वास के मार्ग में जोखिम भी हो सकता है। लेकिन परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए किया गया हर बलिदान उनकी उपस्थिति में ही मिलता है।

फिर परमेश्वर कहते हैं, "मैं ही तुम्हारा प्रतिफल हूँ।" अब्राम, जिसने सदोम के राजा द्वारा दी गई सांसारिक लूट को ठुकरा दिया था, अब उसे स्वर्ग का हिस्सा, स्वयं परमेश्वर, दिया जाता है।

आपको मिलने वाला सबसे बड़ा प्रतिफल क्या है?

फिर भी, एक अधूरे वादे का दर्द उसके दिल में उठ खड़ा होता है।
"हे प्रभु परमेश्वर, आप मुझे क्या देंगे, क्योंकि मैं निःसंतान हूँ?" (पद 2) अब्राम की प्रार्थना बनावटी नहीं बल्कि सच्ची है। वह केवल एक धार्मिक व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह ऐसा व्यक्ति है जो ईमानदारी से परमेश्वर से बात करता है, और परमेश्वर उसकी सुनता है।



प्रभु धैर्यपूर्वक आश्वासन देते हुए उत्तर देते हैं, "तुम्हारे ही शरीर से उत्पन्न होने वाला एक व्यक्ति तुम्हारा उत्तराधिकारी होगा।" फिर वे अब्राम को राात्रि आकाश के नीचे बाहर ले जाते हैं। "अब आकाश की ओर देखो, और यदि तुम गिन सको तो तारों को गिनो" तुम्हारे वंशज भी ऐसे ही होंगे।

स्वयं आकाश अनुग्रह का संदेश बन जाता है - **असीम, तेजस्वी और मानवीय गणना से परे।**
विशाल आकाश के नीचे, अब्राम को याद दिलाया जाता है कि परमेश्वर का वादा उसकी आँखों की पहुँच से कहीं अधिक दूर तक और उसके मन की कल्पना से कहीं अधिक व्यापक है।

जिन तारों को उन्होंने देखा उनमें हम भी शामिल हैं। यह जानकर आपको कैसा लगता है कि परमेश्वर ने उस समय आपके बारे में सोचा?

"यदि आप अपने उद्धार के लिए प्रयास कर सकते हैं, तो परमेश्वर का यह कर्तव्य है कि वह आपको उद्धार प्रदान करे। लेकिन, मेरे मित्र, परमेश्वर अनुग्रह के सिवा किसी अन्य माध्यम से उद्धार नहीं करता। उद्धार का उसका कोई अन्य तरीका कभी नहीं रहा है, और यदि आप उद्धार पाते हैं, तो यह इसलिए होगा क्योंकि आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, आप मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, और आप मानते हैं कि परमेश्वर ने आपके लिए उद्धार का प्रबंध किया है।"



तारों की उस छांव में खड़े होकर, अब्राम विश्वास करता है। परमेश्वर ने वाणी कह दी है, और यही पर्याप्त है। इस सरल क्षण में, पवित्रशास्त्र उद्धार के संपूर्ण इतिहास की सबसे बड़ी सच्चाइयों में से एक को दर्ज करता है:

"उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धार्मिकता गिना।"

उत्पत्ति 15:6



यह वादा किसने किया था?
स्वयं परमेश्वर

विश्वसनीयता
स्वयं परमेश्वर

- परमेश्वर का स्वभाव विश्वसनीय है
- वह बदलता नहीं है।
- विश्वास की जड़ें इस बात में निहित हैं कि परमेश्वर कौन है।

परमेश्वर ने पहले से क्या
किया हुआ है?

- अतीत की वफादारी
- पिछला छुटकारा: इतिहास से साक्ष्य
- इतिहास से साक्ष्य

अब्राम का **विश्वास**

धर्मी विश्वास

उत्पत्ति 15

प्रमाण
विश्वास कसी प्रत्यक्ष प्रमाण पर निर्भर नहीं है

काम
विश्वास प्रदर्शन से नहीं कमाया जाता

स्पष्टीकरण
विश्वास के लिए पूर्ण समझ आवश्यक नहीं है

सदियों बाद, प्रेरित पौलुस ने इसी क्षण का हवाला देते हुए समझाया कि विश्वास करने वाले सभी लोग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं: "परन्तु जो कर्म नहीं करता, परन्तु अधर्मियों को धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास ही उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है" (रोमियों 4:5)। अब्राम का विश्वास उसके बाद आने वाले प्रत्येक विश्वासी के लिए आदर्श बन जाता है।



आपका विश्वास किस आधार पर टिका है?

उन बातों को लिख लें जिन पर आप गलत तरीके से अपना विश्वास आधारित कर रहे हैं। इसके बजाय आपको अपना विश्वास किन बातों पर आधारित करना चाहिए?

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

उत्पत्ति 15:7-21

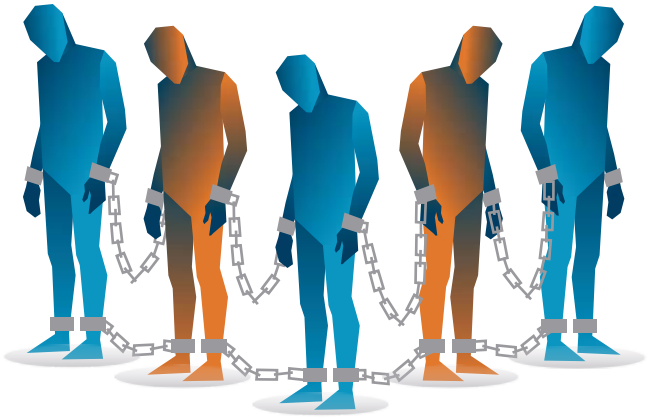
जब अब्राम ने पूछा, "हे प्रभु परमेश्वर, मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं इसका उत्तराधिकारी बनूँगा?" परमेश्वर ने फटकार नहीं लगाई, बल्कि आश्वासन दिया। उन्होंने अब्राम को एक वाचा में आमंत्रित किया जिससे उनका वादा कानूनी और आध्यात्मिक रूप से निश्चित हो गया।



अब्राम जानवरों को इकट्ठा करता है, बलिदान की तैयारी करता है और प्रतीक्षा करता है। जैसे ही सूरज डूबता है, सफाई करने वाले पक्षी शवों पर टूट पड़ते हैं, और अब्राम उन्हें भगा देता है - यह ईश्वर की कृपा की प्रतीक्षा में धैर्य का प्रतीक है।

जैसे ही अंधेरा छाने लगा, अब्राम **गहरी नींद में सो गया**। उस शांति में, परमेश्वर ने भविष्य प्रकट किया: अब्राम के वंशज एक परदेस में परदेसी बनकर रहेंगे, चार सौ वर्षों तक दासता में रहेंगे, और उसके बाद अपार संपत्ति के साथ लौटेंगे।

परमेश्वर ने अमोरी लोगों के प्रति भी अपना धैर्य और दया दिखाई, और न्याय आने से पहले उन्हें पश्चाताप करने का समय दिया।





जब अब्राम सो रहा था, **तब परमेश्वर ने वाचा प्रकट की।**

प्रकाशन का स्रोत संघर्ष में नहीं, **बल्कि समर्पण में है।**

एक **धुआँ उगलती** भट्टी और एक **धधकती मशाल** दिखाई देती है। ये मसीह के प्रतीक हैं। भट्टी न्याय का प्रतीक है, और दीपक उन्हें संसार के प्रकाश के रूप में दर्शाता है। ये बलिदान की वस्तुओं के बीच विचरण करते हैं। अब्राम इनके बीच से नहीं गुजरते, **केवल परमेश्वर ही गुजरते हैं।**

यह वाचा मानवीय प्रयासों पर निर्भर नहीं है, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर निर्भर है। अब्राम का इसमें कोई योगदान नहीं है; **सब कुछ परमेश्वर ने ही सौंपा है।**

जब परमेश्वर आपके लिए वाचा पूरी कर रहा हो, तब सचमुच आराम करने का आपके लिए क्या अर्थ होगा?

यह वाचा का दृश्य अनुग्रह को उसके शुद्धतम रूप में प्रकट करता है। सदियों बाद, मसीह ने हमारी ओर से क्रूस पर बलिदान दिया, और अपने लहू से उद्धार की शाश्वत वाचा को पुष्ट किया।

उस रात, प्रतिज्ञा की गई भूमि की सीमाएँ निर्धारित की गईं, और प्रकाश और अग्नि से वाचा पर मुहर लगाई गई। परमेश्वर का वचन ही पर्याप्त था। उनकी वाचा अटूट थी।



"उन्नीस सौ साल पहले जब मैंने कोई समझौता किया था, तब मैं वहाँ मौजूद भी नहीं था, लेकिन परमपिता परमेश्वर और पुत्र वहाँ थे, और पुत्र क्रूस पर चढ़े और मेरे पापों के लिए मर गए। मैं पाप से पीड़ित हो गया था। मैं कुछ भी वादा नहीं कर सकता था, और आप भी नहीं कर सकते।"

इसके बारे में सोचें

सवाल 1

आप उस शांति में कैसे रह सकते हैं जो यह जानने से मिलती है कि परमेश्वर की वाचा मसीह के माध्यम से पहले ही पूरी हो चुकी है?

सवाल 2

यह अंश आज परमेश्वर के वादों पर आपके विश्वास को कैसे मजबूत करता है?

लागू करें

सवाल 3

उन तरीकों को लिखें जिनसे आप अपनी ताकत के बजाय परमेश्वर की कृपा पर भरोसा करेंगे।

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

इससे आपको क्या सीख मिली ?

अपने जीवन में 'परमेश्वर की बुद्धि' को एकीकृत करना।

मैक्गी का सुविचार



"अब्राम ने क्या करने का वादा किया था? कुछ नहीं। उसने परमेश्वर पर विश्वास किया। और परमेश्वर आपको बचाएगा - अपनी कृपा से बचाएगा - यदि आप उस पर विश्वास करेंगे जो उसने आपके लिए किया है।"



अब्राम के विश्वास की परीक्षा

उत्पत्ति 16

अब्राम के विश्वास की परीक्षा

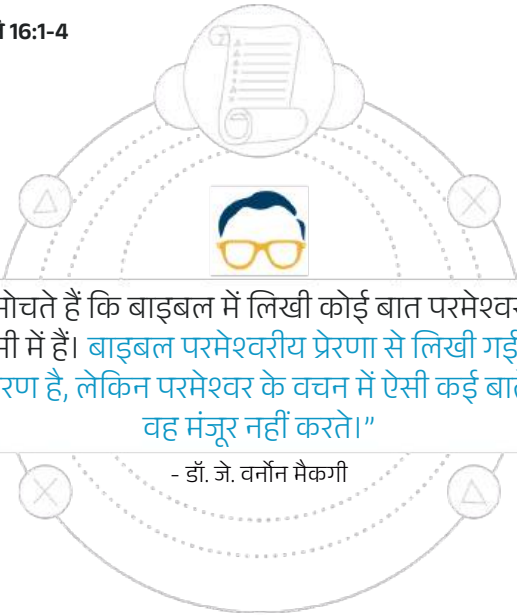
परमेश्वर ,

हमें सिखाओ कि हम आपके समय का इंतज़ार करें और मामलों में खुद दखल न दें। जब हमें इंतज़ार करना पड़े, तो हमें आपके वादे पर भरोसा करने और आपकी योजना में शांति पाने में मदद करो। हमारे निर्णय विश्वास से प्रेरित हों, न कि हमारी अधीरता से।

आमीन

प्रतिज्ञा तक पहुंचने का आसान रास्ता

उत्पत्ति 16:1-4



"अगर हम यह सोचते हैं कि बाइबल में लिखी कोई बात परमेश्वर को मंजूर है, तो हम गलतफहमी में हैं। बाइबल परमेश्वरीय प्रेरणा से लिखी गई है क्योंकि यह एक सटीक विवरण है, लेकिन परमेश्वर के वचन में ऐसी कई बातें लिखी हैं जिन्हें वह मंजूर नहीं करते।"

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

इस अध्याय की शुरुआत अब्राम की कहानी में एक नए पात्र, हागार के परिचय से होती है। अब्राम मिस्र से दो चीजें लेकर आया था - धन और मिस्र की दासी हागार। इन दोनों चीजों ने अब्राम को पापपूर्ण निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया।





गलतियों 4:21-25 में, पौलुस हागार को एक दृष्टांत के रूप में इस्तेमाल करता है। वह हागार और उसकी संतान को व्यवस्था के अधीन बताता है, और सारैऔर उसकी संतान को स्वतंत्र और प्रतिज्ञा के अधीन बताता है।

आप किससे जुड़ना चाहते हैं, **व्यवस्था** से या **मसीह** से?

सारै के शब्दों में अधूरी आशा का दर्द झलकता है, **सारै ने अब्राम से कहा, "देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है इसलिए मैं तुझ से विनती करती हूँ कि तू मेरी दासी के पास जा; सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए।" सारै की यह बात अब्राम ने मान ली।** (उत्पत्ति 16:2)



उसका तर्क स्वाभाविक है, लेकिन आत्मिक नहीं। हताशा में वह उस प्रथा का सुझाव देती है जो उस समय की संस्कृति में प्रचलित थी। परमेश्वर इसे स्वीकार नहीं करता और इस प्रकार की भेंट को स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि यह गलत है।

अब्राम ने सारैकी बात सुनी। विश्वास में स्थिर रहने के बजाय, उसने मानवीय तर्क के आगे घुटने टेक दिए। यह आशा की आवाज़ की जगह बेचैनी की आवाज़ थी।

क्या आपको कभी परमेश्वर की प्रतीक्षा करते-करते बेचैनी महसूस हुई है?

हागर गर्भवती हो जाती है और अहंकार हावी हो जाता है। जो आशीर्वाद पाने का आसान रास्ता लग रहा था, वही फूट का कारण बन जाता है और अब दोनों को अविश्वास के फल का सामना करना पड़ता है। यहाँ असली विफलता नैतिक नहीं, बल्कि आत्मिक है। यह अविश्वास है, परमेश्वर की शक्ति के बिना परमेश्वर के वादे को पूरा करने का प्रयास करना।

अपने जीवन के उन क्षेत्रों को लिखें जहाँ आपको सबसे अधिक "परमेश्वर की सहायता करने" का प्रलोभन होता है। आप विश्वास के साथ प्रतीक्षा करना कैसे सीख सकते हैं?

सरई और हागर के बीच संघर्ष

उत्पत्ति 16:5-16



संघर्ष तेजी से बढ़ता है। गर्भवती हागर को सारैके कठोर व्यवहार का सामना करना पड़ता है और वह डर के मारे अकेले ही जंगल में भाग जाती है। लेकिन यहीं, अपने निर्वासन में, उसे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होती है।



तब यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर कहा (उत्पत्ति 16:7)

पवित्रशास्त्र में प्रभु के दूत का यह पहला उल्लेख है, जिसे प्रतिरूप माना जाता है, मसीह, जो उस समय खोए हुए लोगों की तलाश कर रहा था। वही परमेश्वर जो महिमा में अब्राम से मिला था, अब संकट में फंसी एक दासी से मिलता है।

क्या आपको विश्वास है कि मसीह अभी भी आपको आपके कठिन समय में देख रहा है?

हागार की कहानी में आगे चलकर हम देखते हैं कि परमेश्वर पाप को क्षमा नहीं करते, बल्कि करुणा दिखाते हैं। हागार एक पुत्र, इश्माएल को जन्म देगी, जिसका अर्थ है, "परमेश्वर सुनता है"। परमेश्वर ने उसका दर्द देखा और उसकी पुकार सुनी।



> हागार पर परमेश्वर की कृपा कितनी अद्भुत है! यह उसका पाप नहीं था, इसलिए परमेश्वर ने उसके साथ अत्यंत दयालुता से व्यवहार किया।

हागर इस बात से अभिभूत हो जाती है कि परमेश्वर ने उसे देखा है और वह प्रभु का नाम लेती है

“अत्ताएलरोई”

(יְאָר לְא)

“आप ही वह परमेश्वर हैं जो सब कुछ देखते हैं।”

उत्पत्ति 16:13

भटकने वालों के प्रति परमेश्वर कितना दयालु है! वह न तो समाज से बहिष्कृत लोगों को अनदेखा करता है और न ही कमजोर दिल वालों को भूलता है। जिस परमेश्वर ने रेगिस्तान में हागार को खोजा था, वही परमेश्वर हमारी भी शरण लेता है जब हमारा विश्वास डगमगा जाता है।



इसके बारे में सोचें

सवाल 1

हागार की परमेश्वर से मुलाकात से अपठित और भुला दिए गए लोगों के प्रति परमेश्वर की करुणा के बारे में क्या पता चलता है?

सवाल 2

यह अंश परमेश्वर के वादों को जल्दबाजी में पूरा करने के खतरे के बारे में क्या बताता है?

लागू करें

सवाल 3

क्या आप अपने जीवन से जुड़ा कोई अनुभव या गीत साझा कर सकते हैं, जिसमें आपने परमेश्वर को अत्ताएलरोई, यानी "वह परमेश्वर जो मुझे देखता है" के रूप में अनुभव किया हो?

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

अब्राम की परीक्षाएँ

उत्पत्ति 12 - 16

आगे बढ़ने से पहले, पीछे मुड़कर देखना सहायक होता है। अब्राम का जीवन अनुभवों का एक ऐसा ताना-बाना है जहाँ प्रभु द्वारा विश्वास को लगातार परखा और निखारा जाता है।



उर से बुलावा
अब्राम परमेश्वर के आदेश पर घर छोड़कर विश्वास के साथ आगे बढ़ता है।





कनान में अकाल
भय उसे मिस्र ले जाता है, जहाँ उसे धन और हागर दोनों प्राप्त होते हैं, जो भविष्य में उसके लिए बाधक साबित होते हैं।





धन की परीक्षा:
समृद्धि के कारण लूत के साथ कलह उत्पन्न होती है, लेकिन उदारता प्रबल होती है क्योंकि अब्राम संपत्ति के बजाय शांति को चुनता है।



अभी और भी चुनौतियाँ आनी बाकी थीं





प्रतीक्षा की परीक्षा
दस साल तक पुत्रहीन रहने से अधीरता और समझौता करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, जिसके परिणामस्वरूप इस्माइल का जन्म होता है।



सत्ता की परीक्षा
राजाओं पर विजय प्राप्त करने के बाद, वह सांसारिक पुरस्कारों को अस्वीकार कर देता है और परमेश्वर को अपना स्रोत मानकर उनका सम्मान करता है।

इसके बारे में सोचें

सवाल 1

अब्राम की कौन सी परीक्षा आपकी वर्तमान आस्था यात्रा को सबसे अधिक दर्शाती है?

लागू करें

सवाल 2

असफलताएँ परमेश्वर के साथ आपके जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए सीढ़ी कैसे बन जाती हैं?

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

इससे आपको क्या सीख मिली ?

अपने जीवन में 'परमेश्वर की बुद्धि' को एकीकृत करना।

मैक्गी का सुविचार



"एक छोटे, सीमित मनुष्य के लिए अनंत परमेश्वर की कल्पना करना कठिन है, और हम सभी उन्हें समझने और जानने में असमर्थ हैं। मेरा मानना है कि एक ऐसा विषय जो अनंत काल तक हमें बांधे रखेगा, वह है परमेश्वर को जानना। यह किसी भी मनुष्य के अध्ययन के योग्य है। परमेश्वर को जानना ही मनुष्य के स्थान को अनंत काल तक गरिमा प्रदान करेगा।"



वाचा की पुष्टि

उत्पत्ति 17

वाचा की पुष्टि

हे प्रिय स्वर्गिक पिता,

मुझे याद दिलाइए कि आप सर्वशक्तिमान हैं और अपने हर वादे के प्रति वफादार हैं। मेरे विश्वास को मजबूत कीजिए ताकि मैं आपके सामने निर्दोषता से चल सकूँ, असंभव लगने वाली चीजों पर भी विश्वास कर सकूँ और आपकी शाश्वत वाचा में विश्राम पा सकूँ।

आमीन

परमेश्वर ने अब्राम और साराई का नाम बदल दिया

उत्पत्ति 17:1-19



"यह एक ऐसा व्यक्ति था जो संतान होने से पहले ही पिता बन गया था। उस समय विश्वास के कारण अब्राहम, बहुत से लोगों का पिता था।"

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

चौदह वर्ष बीत चुके हैं और अब्राम निन्यानवे वर्ष के हो चुके हैं। यहोवा ने फिर दर्शन दिया। परमेश्वर ने अपने नाम के नए प्रकाशनमौन के साथ मौन को तोड़ा जिसका अर्थ है: **एल शद्दई, जिसका अर्थ है "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ"।** इस नाम का अर्थ है "सर्व-पर्याप्त"। वह परमेश्वर जिसके पास अपने वादों को पूरा करने की पूर्ण शक्ति है।

एल शद्दई नाम के माध्यम से परमेश्वर अपने बारे में क्या प्रकट कर रहे थे?

यह अब्राम को परमेश्वर के दर्शन का पाँचवाँ दर्ज किया गया है, और वचन
इस अध्याय में “वाचा” शब्द तेरह बार आया है।परमेश्वर अपने वादे की पुष्टि करने और इश्माएल को उत्तराधिकारी के रूप में अस्वीकार करने के लिए आते हैं। उनकी वाचा मानवीय प्रयासों पर नहीं बल्कि ईश्वरीय क्षमता पर आधारित है।

> 'इसलिए अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैंने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। '
>
> उत्पत्ति 17:5

अब्राम का अर्थ है "महान पिता", लेकिन अब्राहम का अर्थ है "जातियों का पिता"। परमेश्वर प्रतिज्ञा पूरी होने से पहले ही उसका नाम बदल देता है। विश्वास में, अब्राहम को उस नाम के अनुसार जीना चाहिए जो परमेश्वर उसे पुकारता है, न कि उसके द्वारा देखी गई चीज़ों के अनुसार।

क्या आपको कभी देखने से पहले ही विश्वास करने के लिए कहा गया है?

ज़रा हमारे साथ उस दृश्य की कल्पना कीजिए: यात्री अब्राहम के तम्बू के पास रुकते हैं, पूछते हैं, "आपका नाम क्या है?" और जब वह जवाब देता है, "जातियों का पिता", तो वे हंस पड़ते हैं, जबकि सारा से उसकी कोई संतान नहीं है। फिर भी अब्राहम का विश्वास बना रहता है। वह इसहाक के जन्म से बहुत पहले ही विश्वास के बल पर पिता बन जाता है।

जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं।



> परमेश्वर ने इन लोगों के साथ एक ऐसी वाचा बाँधी है जो हमेशा के लिए है। यह वाचा इतनी शाश्वत है कि इसे आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता और न ही यह कभी समाप्त होगी। परमेश्वर ने उन्हें इस भूमि पर निन्यानवे साल का पट्टा नहीं दिया, बल्कि उन्हें इस पर हमेशा के लिए अधिकार दिया है।



पद 6 से 9 तक, परमेश्वर का वादा विस्तार से प्रकट होता है। यह कोई अस्थायी व्यवस्था नहीं है। परमेश्वर कहते हैं कि यह वाचा **शाश्वत है** - एक ऐसा शब्द जो उनके आश्वासन में बार-बार आता है।

यह वाचा अब्राहम की पूर्णता पर निर्भर नहीं है, बल्कि परमेश्वर के वादे पर निर्भर है। यह पूरी तरह से परमेश्वर के "**मैं चाहता हूँ**" पर आधारित है।

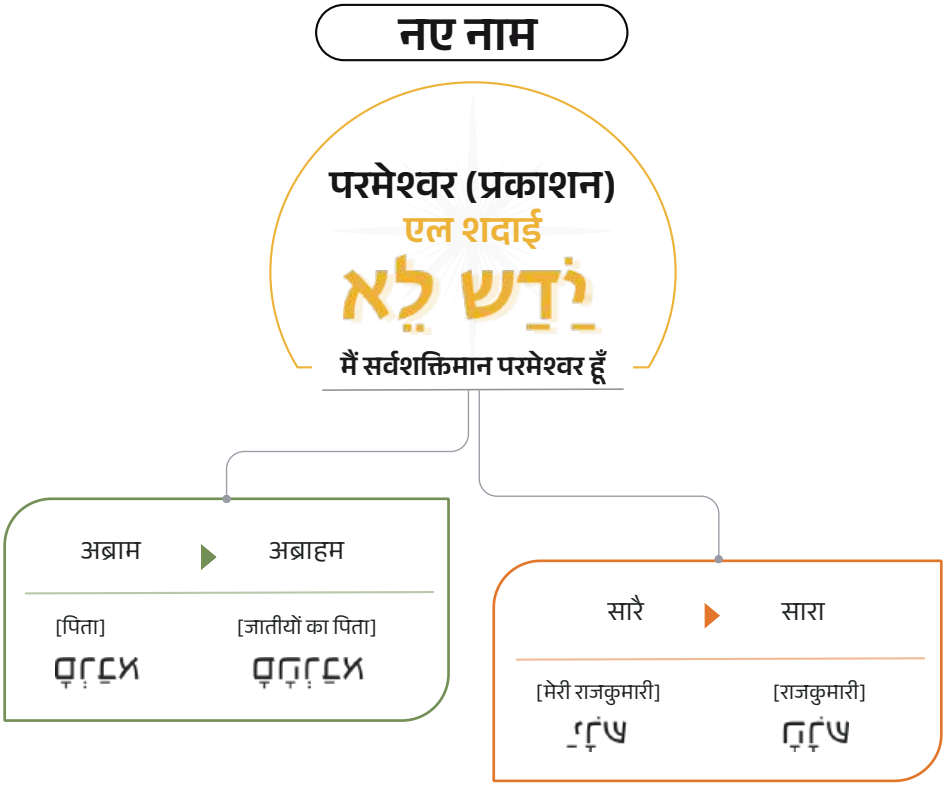
अंत में हमें वाचा के चिन्ह से परिचित कराया जाता है: खतना।

'मेरे साथ बाँधी हुई वाचा, जिसका पालन तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को करना पड़ेगा, वह यह है: तुम में से एक-एक पुरुष का खतना हो। '
उत्पत्ति 17:10

यह शारीरिक क्रिया आत्मिक रूप से अलग होने और परमेश्वर के परिवार से संबंधित होने का प्रतीक थी। खतना वाचा का प्रतीक था, न कि उसका आधार। वाचा प्राप्त करने के लिए उन्हें यह करना आवश्यक नहीं था; परमेश्वर ने पहले ही उनके साथ वाचा कर ली थी।

इसी प्रकार, आज के विश्वासियों के लिए, अच्छे कर्म उद्धार नहीं दिलाते; वे इस बात की गवाही देते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। हम उनके बच्चे बनने के लिए कर्म नहीं करते। हम उनकी आज्ञा का पालन इसलिए करते हैं क्योंकि हम उनके बच्चे हैं।

क्या आपका खतना हुआ है?





"तेरी पत्नी साराई का नाम साराई न रखना, बल्कि उसका नाम सारा रखना। मैं उसे आशीष दूंगा और उससे तुझे एक पुत्र भी दूंगा।" उत्पत्ति 17:15-16

उसका नाम भी बदल जाता है। **"मेरी राजकुमारी" से "राजकुमारी",** जातियों की माता।

अब्राहम का जवाब बहुत ही सुंदर है।
"तब अब्राहम मुंह के बल गिर पड़ा और हँसा।"
(उत्पत्ति 17:17)

यह हँसी अविश्वास की नहीं, बल्कि आश्चर्य की है। वह इस सब की सरासर असंभवता में आनंदित होता है। यह उस आनंद की हँसी है कि परमेश्वर अकल्पनीय कार्य करेगा।

लेकिन जैसे-जैसे खुशी बढ़ती है, वैसे ही दर्द की एक लहर भी उठती है। अब्राहम को इश्माएल की याद आती है।
"**और अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, 'हे परमेश्वर, इश्माएल तेरे सामने जीवित रहे!'"**
उत्पत्ति 17:18

यह एक पिता के हृदय से निकली प्रार्थना है। अब्राहम अपने पुत्र से प्रेम करता है, परन्तु परमेश्वर की योजना सर्वोपरि है।

परमेश्वर इश्माएल को प्रतिज्ञा का वारिस नहीं मानता। उसकी वाचा विश्वास और चमत्कार के पुत्र इसहाक के द्वारा पूरी होगी।

जब परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है, तो कोई भी मानवीय योजना उसकी जगह नहीं ले सकती।

क्या आपने कभी अपनी योजनाओं को परमेश्वर की योजनाओं के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है?

पूर्ति से पहले विश्वास

तुम अनेक जातियों के पिता बनोगे।

उत्पत्ति 17:4



इसके बारे में सोचें

सवाल 1

एक वाचा चिन्ह के रूप में खतना हमें आंतरिक विश्वास और बाहरी कार्यों के बीच अंतर के बारे में क्या सिखाता है?

सवाल 2

अब्राहम की हंसी आपको किस प्रकार याद दिलाती है कि असंभव में विश्वास रखने के साथ अक्सर आनंद भी आता है?

लागू करें

सवाल 3

आपके जीवन का वह कौन सा क्षेत्र है जहाँ आपको परमेश्वर से मोलभाव करना बंद कर देना चाहिए और बस उनके "मैं करूँगा" पर भरोसा करना चाहिए?

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

इश्माएल की विरासत

उत्पत्ति 17:20-27

> परमेश्वर अपने वादे पर कायम है। परमेश्वर इससे ज़रा भी विचलित या विचलित नहीं होगा। वह वही करेगा जो उसने कहा है। वह ऐसे बोलता है मानो इसहाक पहले ही जन्म ले चुका हो और उनके बीच हो। वह उन बातों का ज़िक्र करता है जो अभी नहीं हैं, मानो वे हैं - और यह अगले साल होने वाला है।

परमेश्वर इब्राहीम के इश्माएल के प्रति प्रेम को अनदेखा नहीं करते। अपनी दया से वे आशीष का वादा करते हैं, यद्यपि वाचा का नहीं। इश्माएल संतानोत्पत्ति करेंगे, बारह राजकुमारों और एक महान राष्ट्र के पिता बनेंगे, परन्तु वाचा इसहाक के माध्यम से पूरी होगी।

क्या परमेश्वर को इस्माइल को आशीर्वाद देना आवश्यक था? उनके कार्यों से हमें क्या सीख मिलती है?

परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूँगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा।"
उत्पत्ति 17:21

परमेश्वर की इच्छा निश्चित है। अब्राहम को और विनती करने की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी परमेश्वर का उत्तर अटल होता है, और आज्ञापालन ही एकमात्र सच्चा उत्तर होता है। अब्राहम तुरंत आज्ञापालन करता है।



'तब अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल को लिया और, उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके रुपये से मोल लिये गए थे, अर्थात् उसके घर में जितने पुरुष थे, उन सभी को लेकर उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी खलड़ी का खतना किया। '

उत्पत्ति 17:23

परमेश्वर द्वारा वाचा प्रकट किए जाने के बाद, अब्राहम ने तुरंत आज्ञा का पालन किया। यद्यपि इश्माएल वाचा का सदस्य नहीं था, फिर भी वह आज्ञापालन में शामिल था क्योंकि वह अब्राहम के घराने का था।



परिणाम सामने आने से पहले भी, आप परमेश्वर के वादे में विश्वास के प्रतीक के रूप में आज्ञापालन का कौन सा एक कार्य कर सकते हैं?

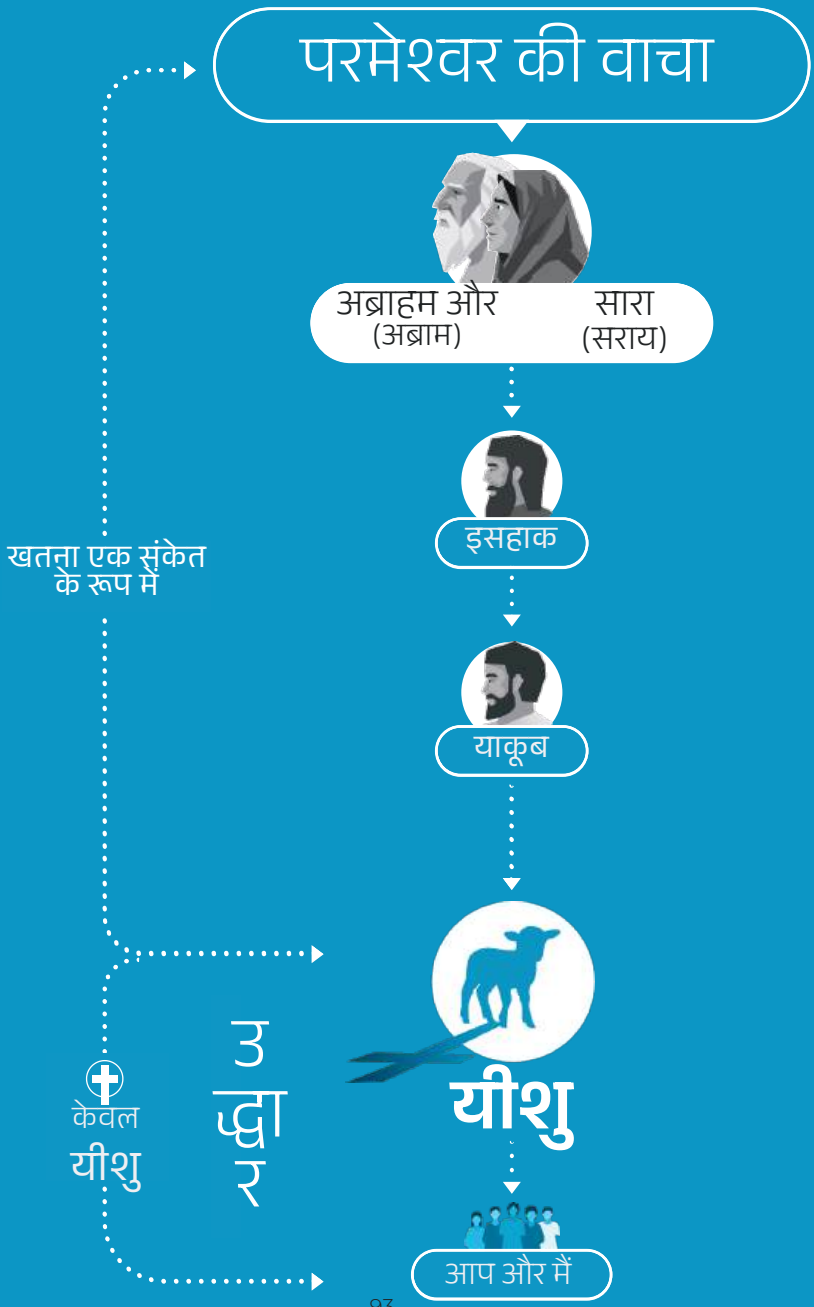
चिंतन करें और लागू करें

सवाल 1

परमेश्वर आपको एक नया नाम दे रहा है ताकि वह आपके साथ किए गए अपने वादे को फिर से पुष्ट कर सके। वह नाम क्या है?

जो लागू करना हैं उसका चित्र बनाये

दृश्य सारांश


परमेश्वर की वाचा
अब्राहम और (अब्राम)
सारा (सराय)
इसहाक
याकूब
यीशु
आप और मैं
खतना एक संकेत के रूप में
केवल यीशु
उद्धार

इससे आपको क्या सीख मिली ?

अपने जीवन में 'परमेश्वर की बुद्धि' को एकीकृत करना।

मैक्गी का सुविचार



"परमेश्वर ने अब्राहम के साथ किस प्रकार की वाचा बांधी? एक शाश्वत वाचा। यदि यह शाश्वत है, तो क्या यह आज भी मान्य है? बिल्कुल है। परमेश्वर ने आपसे और मुझसे वादा किया है कि यदि हम मसीह पर विश्वास करेंगे तो हमें अनन्त जीवन मिलेगा - यह परमेश्वर की एक वाचा है।"

THRU the BIBLE

हमारे संसाधनों तक पहुँचें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें
और ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें
200 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है।

ttb.bible पर जाएँ

स्क्रिप्चर एंगेजमेंट पुस्तक में अधिक खंडों
वाली हमारी इंटरैक्टिव डिजिटल
फ्लिप पुस्तक खोजें हमारी वेबसाइट पर

ttbsa.org पर जाएँ